समकालीन शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का क्षरण : कारण, प्रभाव एवं समाधान

डॉ. रामानन्द तिवारी[1]

1. उत्कर्ष फाउण्डेशन, गोण्डा

सार

समकालीन शिक्षा प्रणाली तीव्र सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के प्रभाव में निरंतर परिवर्तनशील है। शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न होकर व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक विकास तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के बोध को विकसित करना भी है। किंतु वर्तमान परिदृश्य में यह स्पष्ट रूप से देखा जा रहा है कि शिक्षा व्यवस्था में नैतिक मूल्यों का निरंतर क्षरण हो रहा है। प्रतिस्पर्धा–प्रधान शिक्षा, उपभोक्तावाद, शिक्षा का व्यवसायीकरण, डिजिटल एवं सोशल मीडिया का प्रभाव तथा परिवार और समाज की बदलती संरचना ने मूल्य–आधारित शिक्षा को हाशिए पर धकेल दिया है।

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य समकालीन शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों के क्षरण के प्रमुख कारणों की पहचान करना, इसके विद्यार्थियों, समाज एवं राष्ट्र पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना तथा इस संकट से उबरने हेतु व्यावहारिक एवं नीतिगत समाधानों का सुझाव देना है। यह अध्ययन विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें शैक्षिक दार्शनिकों के विचारों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, तथा पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मूल्य–विहीन शिक्षा के कारण विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता, असहिष्णुता, नैतिक निर्णय क्षमता की कमी तथा केवल भौतिक सफलता पर केंद्रित दृष्टिकोण विकसित हो रहा है। समाज में सामाजिक विघटन, आपसी अविश्वास और नैतिक पतन की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं। शोध निष्कर्ष यह भी दर्शाते हैं कि यदि शिक्षा को मूल्य–आधारित दृष्टिकोण से पुनर्संरचित नहीं किया गया, तो मानवता, सामाजिक संतुलन और लोकतांत्रिक मूल्यों पर गंभीर संकट उत्पन्न हो सकता है। अतः शिक्षा में नैतिक मूल्यों का पुनर्स्थापन समय की अनिवार्य आवश्यकता है।

मुख्य शब्द : नैतिक मूल्य, समकालीन शिक्षा, मूल्य–क्षरण, शिक्षा प्रणाली, नैतिक शिक्षा

भूमिका

शिक्षा मानव जीवन का आधार स्तंभ है, जो न केवल ज्ञान और कौशल के विकास का माध्यम है, बल्कि व्यक्ति के नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यक्तित्व के निर्माण में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य में विवेक, मूल्यबोध, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मानवीय संवेदनाओं का विकास होता है। भारतीय शिक्षा परंपरा में शिक्षा को विद्या के रूप में स्वीकार किया गया है, जिसका उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास न होकर चरित्र निर्माण एवं आत्म–विकास रहा है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में सत्य, अहिंसा, करुणा, अनुशासन, सेवा, त्याग एवं आत्मसंयम जैसे नैतिक मूल्यों को शिक्षा का मूल तत्व माना गया था। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षक एवं शिष्य के मध्य घनिष्ठ संबंध स्थापित कर व्यवहारिक जीवन के माध्यम से नैतिक मूल्यों का संचार किया जाता था। किन्तु समकालीन शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के इस मूल उद्देश्य में धीरे–धीरे क्षरण दिखाई देने लगा है। वर्तमान समय में शिक्षा को मुख्यतः रोजगार–उन्मुख, प्रतिस्पर्धात्मक और आर्थिक सफलता से जोड़कर देखा जा रहा है। परीक्षा–केन्द्रित व्यवस्था, अंकों की दौड़, कोचिंग संस्कृति तथा शिक्षा का व्यवसायीकरण शिक्षा के नैतिक और मानवीय पक्ष को कमजोर कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों की उपेक्षा, अनुशासनहीनता, असहिष्णुता, स्वार्थपरक प्रवृत्तियाँ तथा सामाजिक संवेदनशीलता का अभाव बढ़ता जा रहा है। व्यापक सामाजिक स्तर पर यह प्रवृत्तियाँ भ्रष्टाचार, हिंसा, सामाजिक विघटन और आपसी अविश्वास के रूप में परिलक्षित होती हैं।

यह स्थिति शिक्षा व्यवस्था के समक्ष एक गंभीर चुनौती के रूप में उभरकर सामने आई है। यदि शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों को पुनः केन्द्रीय स्थान नहीं दिया गया, तो शिक्षा केवल डिग्री और रोजगार का साधन बनकर रह जाएगी, जिससे समाज में संतुलित, जिम्मेदार और नैतिक नागरिकों का निर्माण कठिन हो जाएगा। अतः समकालीन शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की भूमिका, उनके क्षरण के कारणों एवं समाधान पर गंभीर विमर्श की आवश्यकता है, जो प्रस्तुत अध्ययन का मूल आधार है।

नैतिक मूल्यों की अवधारणा

नैतिक मूल्य वे सामाजिक एवं मानवीय मानदंड हैं, जो व्यक्ति के आचरण, निर्णय क्षमता तथा सामाजिक व्यवहार को उचित दिशा प्रदान करते हैं। ये मूल्य व्यक्ति को सही और गलत के बीच भेद करना सिखाते हैं तथा उसके विचार, वाणी और कर्म में संतुलन स्थापित करते हैं। ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, न्याय, सहिष्णुता, करुणा, उत्तरदायित्व, परोपकार और मानवता जैसे गुण नैतिक मूल्यों के प्रमुख घटक माने जाते हैं। नैतिक मूल्य न केवल व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन को अनुशासित करते हैं, बल्कि समाज में सद्भाव, सहयोग और सामाजिक न्याय की भावना को भी सुदृढ़ करते हैं।

भारतीय दार्शनिक परंपरा में नैतिक मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग माना गया है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, "शिक्षा वह है जो चरित्र निर्माण करे," अर्थात् शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य को नैतिक, आत्मनिर्भर और विवेकशील बनाना है। इसी प्रकार डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिक्षा को नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास से जोड़ते हुए कहा कि मूल्य–विहीन शिक्षा समाज को दिशाहीन बना देती है। इन विचारों से स्पष्ट होता है कि नैतिक मूल्य शिक्षा के मूल में निहित होने चाहिए।

नैतिक मूल्यों का विकास केवल सैद्धांतिक ज्ञान से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए व्यवहारिक एवं जीवनोपयोगी शिक्षा की आवश्यकता होती है। यह तभी संभव है जब विद्यालयी पाठ्यक्रम में मूल्य–आधारित विषयों को समुचित स्थान दिया जाए, शिक्षक अपने आचरण द्वारा आदर्श प्रस्तुत करें, विद्यालयी वातावरण सहयोगात्मक एवं अनुशासित हो तथा परिवार एवं समाज नैतिक मूल्यों के संवर्धन में सक्रिय भूमिका निभाएँ। इस प्रकार पाठ्यक्रम, शिक्षक व्यवहार, विद्यालयी संस्कृति और सामाजिक परिवेश के समन्वय से ही नैतिक मूल्यों का प्रभावी विकास संभव हो सकता है।

समकालीन शिक्षा प्रणाली का स्वरूप

वर्तमान शिक्षा प्रणाली वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण की प्रक्रियाओं से गहराई से प्रभावित है। इन परिवर्तनों ने शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य और कार्यप्रणाली में व्यापक बदलाव उत्पन्न किए हैं। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने शिक्षा को अधिक सुलभ, बहुआयामी और तकनीक–संपन्न अवश्य बनाया है, किंतु इसके साथ अनेक शैक्षिक एवं नैतिक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। डिजिटल माध्यमों के अत्यधिक प्रयोग ने शिक्षक–विद्यार्थी के प्रत्यक्ष संवाद को सीमित किया है, जिससे शिक्षा का मानवीय पक्ष कमजोर होता जा रहा है।

समकालीन शिक्षा प्रणाली का एक प्रमुख स्वरूप परीक्षा–केन्द्रित शिक्षा है, जिसमें अधिगम की वास्तविक गुणवत्ता के स्थान पर अंकों और परिणामों को अधिक महत्व दिया जाता है। विद्यार्थियों का मूल्यांकन मुख्यतः परीक्षाओं और अंकों के आधार पर किया जाता है, जिससे रचनात्मकता, नैतिक संवेदनशीलता एवं समग्र विकास की उपेक्षा होती है। इसी के साथ अंक एवं रैंक आधारित प्रतिस्पर्धा ने विद्यार्थियों में तनाव, असहिष्णुता और स्वार्थपरक प्रवृत्तियों को बढ़ावा दिया है।

कोचिंग संस्कृति का तेजी से विस्तार शिक्षा को यांत्रिक और बाजार–आधारित बना रहा है। विद्यालयों की भूमिका सीमित होती जा रही है और शिक्षा केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने तक सिमटती जा रही है। इसके अतिरिक्त शिक्षा का व्यवसायीकरण एक गंभीर समस्या के रूप में उभरा है, जहाँ ज्ञान के

स्थान पर लाभ को प्राथमिकता दी जा रही है। निजी शिक्षण संस्थानों में नैतिक और सामाजिक उद्देश्यों की अपेक्षा आर्थिक हितों को अधिक महत्व दिया जाता है।

इन सभी परिवर्तनों के परिणामस्वरूप शिक्षक–विद्यार्थी संबंधों में भी औपचारिकता आ गई है। शिक्षक मार्गदर्शक और नैतिक आदर्श की भूमिका से हटकर केवल विषय–वस्तु तक सीमित होते जा रहे हैं। इस प्रकार समकालीन शिक्षा प्रणाली का यह स्वरूप शिक्षा के मानवीय, नैतिक एवं मूल्यपरक पक्ष को कमजोर कर रहा है, जो समाज और राष्ट्र के लिए चिंताजनक संकेत है।

नैतिक मूल्यों के क्षरण के प्रमुख कारण

नैतिक मूल्यों के क्षरण के प्रमुख कारण

1. **शिक्षा का व्यवसायीकरण**

   समकालीन शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों के क्षरण का एक प्रमुख कारण शिक्षा का तीव्र व्यवसायीकरण है। निजी शिक्षण संस्थानों की बढ़ती संख्या ने शिक्षा को सेवा के बजाय उद्योग के रूप में स्थापित कर दिया है। इन संस्थानों में ज्ञान और चरित्र निर्माण की अपेक्षा लाभ, ब्रांडिंग और प्रतिस्पर्धा को अधिक प्राथमिकता दी जा रही है। परिणामस्वरूप शिक्षा के मूल नैतिक उद्देश्य गौण हो गए हैं और विद्यार्थियों को उपभोक्ता के रूप में देखा जाने लगा है। यह प्रवृत्ति शिक्षा के मानवीय और मूल्यपरक स्वरूप को कमजोर करती है।

2. **परिवार व्यवस्था में परिवर्तन**

   परिवार नैतिक मूल्यों के विकास की प्रथम और महत्वपूर्ण इकाई है। किंतु वर्तमान समय में संयुक्त परिवारों का विघटन, एकल परिवारों की बढ़ती संख्या, माता–पिता का कार्य में अत्यधिक व्यस्त रहना तथा बच्चों के लिए समय की कमी ने नैतिक संस्कारों के विकास को प्रभावित किया है। जब परिवार स्तर पर मूल्य–बोध कमजोर होता है, तो विद्यालय अकेले नैतिक विकास की जिम्मेदारी प्रभावी रूप से निभा नहीं पाता।

3. **पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा की उपेक्षा**

   विद्यालयी पाठ्यक्रम में नैतिक एवं मूल्य शिक्षा को सीमित स्थान दिया गया है। अधिकांशतः यह शिक्षा सैद्धांतिक एवं औपचारिक बनकर रह गई है, जिसका विद्यार्थियों के दैनिक जीवन से सीधा संबंध नहीं बन पाता। गतिविधि–आधारित, अनुभवात्मक एवं व्यवहारिक मूल्य शिक्षा के अभाव में विद्यार्थी नैतिक सिद्धांतों को व्यवहार में नहीं अपना पाते, जिससे मूल्य–क्षरण की स्थिति उत्पन्न होती है।

4. **डिजिटल एवं सोशल मीडिया का प्रभाव**

   डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया ने बच्चों और युवाओं के जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। अनियंत्रित इंटरनेट उपयोग, हिंसक, भौतिकवादी एवं उपभोक्तावादी सामग्री की अधिकता ने विद्यार्थियों के आचरण, भाषा और सोच पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। आभासी संसार में समय बिताने से सामाजिक संवेदनशीलता, सहानुभूति और नैतिक विवेक का विकास बाधित हो रहा है।

5. **नैतिक आदर्शों का अभाव**

   राजनीति, प्रशासन और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नैतिक आदर्शों की कमी भी नैतिक मूल्यों के क्षरण का एक महत्वपूर्ण कारण है। जब सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार, अवसरवादिता और अनैतिक आचरण दिखाई देता है, तो विद्यार्थी भी इन्हीं प्रवृत्तियों को सामान्य मानने लगते हैं। आदर्श व्यक्तित्वों और सकारात्मक रोल मॉडल्स के अभाव में नैतिक मूल्यों का प्रभावी संचार संभव नहीं हो पाता।

नैतिक मूल्यों के क्षरण के प्रभाव

1. **विद्यार्थियों पर प्रभाव**

नैतिक मूल्यों के क्षरण का सबसे प्रत्यक्ष और गहरा प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है। मूल्य–विहीन शिक्षा के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है, जिससे विद्यालयी वातावरण अव्यवस्थित होता है। असहिष्णुता और आक्रामकता जैसी प्रवृत्तियाँ विद्यार्थियों के व्यवहार में परिलक्षित होने लगती हैं, जिससे आपसी सहयोग और सह–अस्तित्व की भावना कमजोर होती है। इसके अतिरिक्त शिक्षा का उद्देश्य केवल भौतिक सफलता, अधिक आय और सामाजिक प्रतिष्ठा तक सीमित हो जाता है। इस भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण नैतिकता, सेवा भावना और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों की उपेक्षा होने लगती है, जो विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास में बाधक सिद्ध होती है।

2. **समाज पर प्रभाव**

जब शिक्षा प्रणाली नैतिक मूल्यों का संवर्धन नहीं कर पाती, तो इसका प्रतिकूल प्रभाव समाज पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। समाज में सामाजिक विघटन, पारिवारिक अस्थिरता और आपसी संबंधों में तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है। नैतिक मूल्यों के अभाव में अपराध, भ्रष्टाचार, हिंसा और अनैतिक गतिविधियों में वृद्धि देखी जाती है। इसके साथ ही समाज में आपसी विश्वास और सामाजिक सहयोग की भावना कमजोर पड़ जाती है, जिससे सामूहिक विकास और सामाजिक समरसता बाधित होती है।

3. **राष्ट्र पर प्रभाव**

नैतिक मूल्यों के क्षरण का दीर्घकालिक और व्यापक प्रभाव राष्ट्र पर पड़ता है। मूल्य–विहीन शिक्षा जिम्मेदार, संवेदनशील और कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों के निर्माण में असफल रहती है। इसके परिणामस्वरूप लोकतांत्रिक मूल्यों, संवैधानिक आदर्शों और राष्ट्रीय एकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। नागरिकों में कानून के प्रति सम्मान, सामाजिक न्याय और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना कमजोर होने लगती है। यह स्थिति अंततः सामाजिक एवं नैतिक संकट को जन्म देती है, जो किसी भी राष्ट्र की प्रगति और स्थायित्व के लिए गंभीर चुनौती बन सकती है।

6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और नैतिक मूल्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा व्यवस्था को केवल ज्ञान और कौशल तक सीमित न रखकर उसे नैतिक, सामाजिक और मानवीय मूल्यों से युक्त समग्र शिक्षा के रूप में विकसित करने का स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह नीति यह स्वीकार करती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार सृजन नहीं, बल्कि संवेदनशील, जिम्मेदार, नैतिक एवं राष्ट्रनिष्ठ नागरिकों का निर्माण भी है।

NEP 2020 में मूल्य–आधारित शिक्षा को शिक्षा के प्रत्येक स्तर प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक का अभिन्न अंग माना गया है। नीति में सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, सहयोग, ईमानदारी, सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक चेतना तथा संवैधानिक मूल्यों के विकास पर विशेष बल दिया गया है। इसके अंतर्गत संविधान की मूल भावना, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और धर्मनिरपेक्षता को शैक्षिक पाठ्यक्रम का आधार बनाने की बात कही गई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System) को पुनर्स्थापित करने पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। उपनिषदों, वेदों, बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन, सूफी परंपरा और भारतीय संत परंपरा में निहित नैतिक मूल्यों को आधुनिक संदर्भों से जोड़कर प्रस्तुत करने का सुझाव दिया गया है, जिससे विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गर्व,

नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास हो सके।

नीति में जीवन कौशल (Life Skills), जैसे–आत्मानुशासन, निर्णय क्षमता, सहानुभूति, संघर्ष समाधान, नेतृत्व और सहयोगात्मक व्यवहार को शिक्षा का अनिवार्य घटक माना गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि नैतिक शिक्षा को केवल सैद्धांतिक विषय न मानकर व्यवहारिक और अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से विकसित करने की परिकल्पना की गई है।

NEP 2020 में शिक्षक की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। शिक्षक को केवल विषयवस्तु का संप्रेषक न मानकर मार्गदर्शक, प्रेरक एवं नैतिक आदर्श के रूप में स्वीकार किया गया है। शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिकता, व्यावसायिक आचरण और मानवीय संवेदनशीलता को अनिवार्य रूप से शामिल करने की अनुशंसा की गई है। यह दृ ष्टिकोण नैतिक मूल्यों के पुनरुत्थान की दिशा में एक सकारात्मक और व्यावहारिक संकेत प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त, नीति में बहुविषयक शिक्षा, समावेशी वातावरण, समान अवसर, सामाजिक सहभागिता और सेवा आधारित अधिगम (Service Learning) को प्रोत्साहित किया गया है, जिससे विद्यार्थी समाज से जुड़कर नैतिक और सामाजिक मूल्यों को आत्मसात कर सकें।

इस प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समकालीन शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों के क्षरण की समस्या को स्वीकार करते हुए उसके समाधान हेतु संरचनात्मक, पाठ्यक्रमीय और व्यवहारिक स्तर पर ठोस प्रयासों का मार्ग प्रशस्त करती है। यदि नीति के प्रावधानों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए, तो शिक्षा को पुनः उसके मानवीय, नैतिक और सामाजिक उद्देश्य से जोड़ा जा सकता है।

7. नैतिक मूल्यों के पुनर्स्थापन हेतु समाधान

समकालीन शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों के क्षरण की समस्या केवल शैक्षणिक नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय चिंता का विषय है। इस संकट से उबरने के लिए शिक्षा के विभिन्न घटकोंकृपाठ्यक्रम, शिक्षक, विद्यालयी वातावरण, परिवार, समाज तथा डिजिटल माध्यमकृके समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। निम्नलिखित समाधान इस दिशा में प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं–

1. पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा का समावेश

पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को केवल एक सैद्धांतिक विषय के रूप में न रखकर उसे व्यवहारिक, अनुभवात्मक और गतिविधि–आधारित बनाया जाना चाहिए। कहानी–वाचन, नाटक, समूह–चर्चा, परियोजना कार्य, सेवा–अधिगम (मतअपबम स्मंतदपदह) तथा जीवन–परिस्थितियों पर आधारित गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा, सहानुभूति, सहयोग, जिम्मेदारी और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का विकास किया जा सकता है। मूल्य शिक्षा को सभी विषयों के साथ अंतःविषय रूप में जोड़ा जाना अधिक प्रभावी होगा।

2. शिक्षक की भूमिका

नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षक की भूमिका केन्द्रीय है। शिक्षक को केवल विषय–विशेषज्ञ तक सीमित न रखते हुए नैतिक आदर्श, प्रेरक एवं मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। उनका आचरण, व्यवहार, भाषा और निर्णय विद्यार्थियों के लिए प्रत्यक्ष उदाहरण बनते हैं। अतः शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिक शिक्षा, व्यावसायिक आचार–संहिता, मानवीय संवेदनशीलता और मूल्य–आधारित शिक्षण पद्धतियों को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

3. विद्यालयी वातावरण

विद्यालयी वातावरण का नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। विद्यालय में सहयोग, अनुशासन, परस्पर सम्मान, समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने वाली संस्कृति विकसित की जानी चाहिए। छात्र–परिषद, सामूहिक

निर्णय–प्रक्रिया, सहशैक्षिक गतिविधियाँ और सामाजिक सेवा कार्यक्रम विद्यार्थियों को व्यावहारिक रूप से नैतिक मूल्यों को अपनाने का अवसर प्रदान करते हैं। भय–आधारित अनुशासन के स्थान पर संवाद और सहभागिता पर आधारित अनुशासन प्रणाली अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकती है।

4. **परिवार और समाज की सहभागिता**

नैतिक शिक्षा केवल विद्यालय की जिम्मेदारी नहीं है। परिवार और समाज का सहयोग इसके लिए अनिवार्य है। अभिभावकों को बच्चों के नैतिक विकास में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए तथा विद्यालय के साथ निरंतर संवाद बनाए रखना चाहिए। समाज में सकारात्मक आदर्श, नैतिक नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार बच्चों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनते हैं। विद्यालय–समुदाय साझेदारी से नैतिक मूल्यों का स्थायी विकास संभव है।

5. **डिजिटल साक्षरता और नैतिक नियंत्रण**

डिजिटल युग में नैतिक शिक्षा का दायरा डिजिटल माध्यमों तक विस्तारित करना आवश्यक है। विद्यार्थियों में डिजिटल साक्षरता, साइबर नैतिकता, मीडिया विवेक और जिम्मेदार ऑनलाइन व्यवहार का विकास किया जाना चाहिए। डिजिटल माध्यमों के सकारात्मक, रचनात्मक और शैक्षणिक उपयोग पर बल देते हुए उनके दुरुपयोग से बचाव हेतु नैतिक नियंत्रण और मार्गदर्शन आवश्यक है। इससे तकनीक शिक्षा का साधन बनेगी, न कि नैतिक पतन का कारण।

उपरोक्त समाधानों के प्रभावी क्रियान्वयन से शिक्षा को पुनः उसके मानवीय, नैतिक और सामाजिक उद्देश्य से जोड़ा जा सकता है। नैतिक मूल्यों का पुनर्स्थापन तभी संभव है जब शिक्षा प्रणाली के सभी घटक सामूहिक रूप से उत्तरदायित्व निभाएँ।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि समकालीन शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का क्षरण एक गम्भीर एवं बहुआयामी चुनौती के रूप में उभर कर सामने आया है। इस क्षरण का प्रभाव केवल विद्यार्थियों के व्यक्तिगत आचरण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका दुष्प्रभाव समाज की संरचना, सामाजिक सौहार्द, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा राष्ट्रीय चरित्र पर भी प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होता है। जब शिक्षा का लक्ष्य केवल अंक, रैंक, प्रतिस्पर्धा और रोजगार तक सीमित हो जाता है, तब उसमें निहित मानवीय संवेदना, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक चेतना क्रमशः कमजोर होती जाती है। ऐसी स्थिति में शिक्षा मानव निर्माण के स्थान पर मात्र आर्थिक उत्पादन का साधन बनकर रह जाती है, जो दीर्घकाल में मानवता और सामाजिक संतुलन के लिए घातक सिद्ध हो सकती है।

अध्ययन यह संकेत देता है कि नैतिक मूल्यों का विकास किसी एक घटक पर निर्भर नहीं करता, बल्कि यह पाठ्यक्रम, शिक्षक, विद्यालयी वातावरण, परिवार, समाज तथा डिजिटल संस्कृति के समन्वित प्रयासों से ही संभव है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को समग्र, समावेशी एवं मूल्य–आधारित बनाने की दिशा में एक सशक्त और सकारात्मक पहल प्रस्तुत करती है। नीति में नैतिकता, संवैधानिक मूल्य, भारतीय ज्ञान परंपरा, जीवन कौशल और चरित्र निर्माण पर दिया गया बल समकालीन शिक्षा की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

हालाँकि, नीति की सफलता केवल उसके घोषणात्मक स्वरूप पर नहीं, बल्कि उसके प्रभावी एवं व्यावहारिक क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक नैतिक आदर्श के रूप में कार्य करें, विद्यालय मूल्य–आधारित संस्कृति विकसित करें, अभिभावक बच्चों के संस्कार निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएँ, समाज सकारात्मक आदर्श प्रस्तुत करे तथा नीति–निर्माता शिक्षा को व्यवसाय नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का सशक्त माध्यम मानें।

अंततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षा में नैतिक मूल्यों का पुनर्स्थापन समय की अनिवार्य आवश्यकता है। मूल्य–आधारित, मानव–केंद्रित और समग्र शिक्षा ही ऐसे उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण कर सकती है, जो न केवल आर्थिक रूप से सक्षम हों, बल्कि नैतिक, सामाजिक और मानवीय दृष्टि से भी सशक्त राष्ट्र की आधारशिला रख सकें।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकारण् (2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली– शिक्षा मंत्रालय।
2. राधाकृष्णनए डॉ. एस. (1965) भारतीय शिक्षाण् नई दिल्ली– ओरिएंट लॉन्गमैन।
3. विवेकानंद, स्वामी, (2008) शिक्षा पर विचारण् अद्वैत आश्रम।
4. NCERT (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, नई दिल्ली।
5. गांधी, मोहनदास करमचंद, (2010) बुनियादी शिक्षा. अहमदाबाद– नवजीवन प्रकाशन।
6- यूनेस्को (2015) Rethinking Education: Towards a Global Common Good, पेरिस– UNESCO Publishing.
7. यादव, एस. (2018) शिक्षा और नैतिक मूल्य, नई दिल्ली– ओरिएंट ब्लैकस्वान।
8. शर्मा, आर. के. (2016), शिक्षा का समाजशास्त्र, मेरठ– राधा प्रकाशन।
9. कुमार, एन. (2019), समकालीन शिक्षा में मूल्यों का संकट, भारतीय शैक्षिक शोध पत्रिका, 8(2), 45–52।